शिव स्तुति

जय राम रमारमनं समनं । भवताप भयाकुल पाहि जनं ।

अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ।।

दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ।

रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ।।

महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ।

मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ।।

मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ।

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावँर भूलि परे ।।

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ।

भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ।।

अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्हकें पद पंकज प्रीति नहीं ।

अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ।।

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ।

एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ।।

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ।

सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ।।

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ।

तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ।।

गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ।

रघुनंद निकंदन द्वंद्वघनं । महिपाल बिलोकय दीनजनं ।।

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ।।